तरह सामान्य रूप से अन्तस् के कोने में पड़ा हुआ चिंदश जब तक हमारे जीवन के साथ संयुक्त नहीं होता, तब तक वह निर्गुण, निरामोद और निर्व्यक्त पड़ा रहता है, ज्यों ही वह इस पार्थिव शरीर के शिलाखण्ड पर जीवन के छिड़काव से बार-बार रगड़ खाने लगता है, त्यों ही उसका गुण, उसका आमोद और उसका चैतन्य अभिव्यक्त हो उठते हैं। विश्वात्मा की सुषुप्त शक्ति स्फुरित हो जाती है।

(द) प्रतिभा ईश्वरदत्त होती है। अभ्यास से वह नहीं प्राप्त होती है, इस शक्ति को कवि मां के पेट से लेकर पैदा होता है। इसी बदौलत वह भूत और भविष्यत् को हस्तआमलकवत् देखता है, वर्तमान की तो कोई बात ही नहीं। इसी की कृपा से वह सांसारिक बातों को एक अजीब निराले ढंग से बयान करता है, जिसे सुनकर सुनने वाले के हृदयोदधि में नाना प्रकार के सुख, दुःख, आश्चर्य आदि विकारों की लहरें उठने लगती हैं। कवि कभी-कभी ऐसी अद्भुत बातें कह देते हैं कि जो कवि नहीं हैं, उनकी पहुँच वहाँ तक कभी हो ही नहीं सकती है।

इकाई - तीन

6. ''ध्रुवस्वामिनी' की कथावस्तु भले ही ऐतिहासिक हो, परन्तु उसमें निहित समस्या और समस्या का निराकरण उसे प्रासंगिक बनाते हैं।' इस कथन का विश्लेषण कीजिए। 7

7. एकांकी के तत्वों के आधार पर 'पृथ्वीराज की आँखें' एकांकी की समीक्षा कीजिए। 7

इकाई - चार

8. 'लज्जा और ग्लानि' निबन्ध के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध शैली की विशेषताओं की विवेचना कीजिए। 7

9. 'शिरीष के फूल' निबन्ध की विषयवस्तु पर प्रकाश डालिए। 7

A **(Printed Pages 4)**

Roll No._____

A-194

बी. ए. (प्रथम) परीक्षा, 2015

(रेगुलर)

हिन्दी

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(हिन्दी नाटक तथा निबन्ध साहित्य)

समय : तीन घण्टे पूर्णांक : 50

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए जिनमें **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न कीजिए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर लिखिए : $2 \times 10 = 20$

(क) नाटक की वह कौन-सी मूलभूत विशेषता है जो उसे एकांकी से अलग करती है?

(ख) 'कोमा' के चरित्र की दो प्रमुख विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए।

(ग) रामगुप्त के चरित्र की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(घ) एकांकी के प्रमुख तत्वों का परिचय दीजिए।

(ङ) 'पृथ्वीराज की आँखें' एकांकी में पृथ्वीराज की धनुर्विद्या की किस विशेषता का उल्लेख है?

(च) 'ताँबे के कीड़े' और 'कुमारसम्भव' की एकांकियों के लेखकों के नाम लिखिए।

(छ) 'तुम चंदन हम पानी' किस प्रकार का निबन्ध है? इसके लेखक का नाम लिखिए।

(ज) 'निबन्ध' का आशय स्पष्ट करते हुए उसके प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

(झ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध शैली की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ञ) नाटक के तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

इकाई - एक

2. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : 4+4=8

(क) प्रणय, प्रेम! जब सामने से आते हुए तीव्र आलोक की तरह आँखों में प्रकाश-पुंज उड़ेल देता है, तब सामने की सब वस्तुएँ और भी अस्पष्ट हो जाती हैं। अपनी ओर से कोई भी प्रकाश की किरण नहीं। तब वही, केवल वही! हो पागलपन, भूल हो, दुःख मिले, प्रेम करने की एक ऋतु होती है। उसमें चूकना, उसमें सोच-समझकर चलना दोनों बराबर हैं।

(ख) जैसे तुम्हें देखकर हृदय में एक प्रकार की पुलक, एक प्रकार की प्रसन्नता होती है, उसी प्रकार प्रकृति का सौदर्य, उसका विलास देखकर मन में एक प्रकार का आह्लाद होता है। उस आह्लाद को, उस सौन्दर्य को बंधे शब्दों में उतार देने का नाम कविता है। जो कवि जितनी सूक्ष्म भावना को तन्मयता के साथ, आत्मा में व्याप्त रस को पचाकर शब्दों के चित्रों द्वारा, कल्पना की कूर्चिका से मानव के हृदय-पटल पर प्रत्येक हाव, भाव चेष्टा से युक्त खींच सकता है, वह उतना ही महान कवि है।

3. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : 4+4=8

(ग) प्रेम का नाम न लो। वह एक पीड़ा थी जो छूट गयी। उसकी कसक भी धीरे-धीरे दूर हो जायगी। राजा, मैं तुम्हें प्यार नहीं करती। मैं तो दर्प से दीप्त तुम्हारी महत्त्वमयी पुरूष-मूर्ति की पुजारिन थी, जिस में पृथ्वी पर अपने पैरों से खड़े रहने की दृढ़ता थी। इस स्वार्थ-मलिन कलुष से

भरी मूर्ति से मेरा परिचय नहीं। अपने तेज की अग्नि में जो सब कुछ भस्म कर सकता हो, उस दृढ़ता का आकाश के नक्षत्र कुछ बना-बिगाड़ नहीं सकते। तुम आशंका-मात्र से दुर्बल-कम्पित और भयभीत हो।

(घ) सुनो तो। मेरे लिए -जीवन में ऐसी सूखी चट्टानें थोड़े ही हैं। मेरी कविता ही मेरी हरी-भरी वाटिका है। मैं उसे प्यार करता हूँ, क्योंकि मुझे उसमें सौदर्य दिखता है। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, क्योंकि मुझे तुम्हारे हृदय में सौदर्य दिखता है। जिस रोज मैं तुमसे दूर हो जाऊँगा, उस रोज मैं सौंदर्य से दूर हो जाऊँगा। अपनी कविता से दूर हो जाऊँगा।

इकाई - दो

4. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : 4+4=8

(अ) जिसमें शील-संकोच नहीं वह पूरा मनुष्य नहीं। बाहरी प्रतिबन्धों से ही हमारा पूरा शासन नहीं हो सकता-उन सब बातों की रुकावट नहीं हो सकती, जिन्हें हमें न करना चाहिए। प्रतिबन्ध हमारे अन्तःकरण में होना चाहिए। वह अभ्यन्तर प्रतिबन्ध दो प्रकार का हो सकता है एक विवेचनात्मक जो प्रयत्नसाध्य होता है, दूसरा मनः प्रवृत्यात्मक जो स्वभावज होता है।

(ब) वासनाएँ स्वतः भली या बुरी नहीं होतीं। उनका भला या बुरा होना, उनके आलम्बन पर निर्भर हैं। जो वासना पुत्र-कलत्र-धन इत्यादि की ओर आकृष्ट हो कर मोह कहाती है और बन्धन का कारण होती है, वहीं भगवान् की ओर आकृष्ट होने से उपासना या भक्ति कहाती है और जीव की मुक्ति का कारण हो जाती है।

5. निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : 4+4=8

(स) मुझे कभी-कभी यह ध्यान आता है कि काठ के टुकड़े की